अध्याय 40

परमेश्वर का दूसरा संदेश (भाग 1)

अध्याय 40 में यहोवा ने अपने पहले संदेश को समाप्त किया (40:1, 2), और अय्यूब को छोटा सा उत्तर दिया (40:3-5)। फिर यहोवा अपना दूसरा संदेश देने लगा (40:6-24)।

यहोवा ने अय्यूब को आकाश और पृथ्वी के बड़े भेदों अर्थात जड़ और चेतन पर ध्यान दिलाया। उसने उसे समझाया कि परमेश्वर का प्रबन्ध आकाश और पृथ्वी के हर पहलू में पाया जाता है। वह सारी सृष्टि के लाभ के लिए विभिन्न शक्तियों को संचालित करता है। यदि परमेश्वर आकाश के पक्षियों तथा रेगिस्तान और जंगली जीवों के लिए उपलब्ध करवाता है तो क्या वह मनुष्य के लिए उपलब्ध नहीं करवाएगा, जिसे उसे उसके अपने स्वरूप पर रचा गया है। यदि वह भौतिक संसार में सही काम करता है तो क्या वह नैतिक क्षेत्र में भी काम नहीं करेगा? होमेर हेली ने कहा है:

> दोनों में परमेश्वर के प्रबन्ध की आलोचना करने का अर्थ अपने आपको ऐसे योग्य बनाना है जो परमेश्वर को सिखा सके। अपने विरुद्ध लगे आरोपों के बीच अपने निर्दोष होने की सफाई देना गलत नहीं था; परन्तु परमेश्वर पर अपने संसार पर कुप्रबन्ध का आरोप लगाना और अपने प्रति उसके ऊपर क्रूर होने का आरोप लगाना, और उसे मुकदमे की चुनौती देना बहुत बड़ी ज्यादती और गलत काम होना था।[1]

अय्यूब के सामने मुद्दा यह था कि क्या वह परमेश्वर को अच्छा और विश्वासयोग्य जाकर उस पर भरोसा करना जारी रखेगा क्या फिर उसे अपना शत्रु मानकर नकार देगा।

सारांश: मुद्दे की बात (40:1, 2)

[1]फिर यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा: [2]''क्या जो बकवास करता है वह सर्वशक्तिमान से झगड़ा करे? जो परमेश्वर से विवाद करता है वह इसका उत्तर दे।''

आयतें 1, 2. यहां पर **यहोवा ने अय्यूब** से सीधे बात की। उसने एक सवाल किया जो सीधे मुद्दे की बात करता है: **''क्या जो बकवास करता है वह सर्वशक्तिमान से झगड़ा करे?''** मूल भाषा में संज्ञा शब्द ''जो बकवास करे'' (*yissor, यिस्सोर*) केवल यहीं पर मिलता है। यह ''फटकारना'' वाले अर्थ पर मूल शब्द पर आधारित है।[2] ''झगड़ा'' (*rib, रिब*) करने का अर्थ मुकद्दमा करना होता और आम तौर पर इसका अर्थ ''झगड़ा'' करना ही है।[3] यदि अय्यूब ''सर्वशक्तिमान से झगड़ा'' करने के योग्य था तो उसे उन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार होना चाहिए था जो परमेश्वर ने अध्याय 38 और 39 में पूछे थे।

अय्यूब का उत्तर (40:3-5)

[3]तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया, [4]''देख, मैं तो तुच्छ हूँ, मैं तुझे क्या उत्तर दूँ? मैं

अपनी अंगुली दाँत तले दबाता हूँ। [5]एक बार तो मैं कह चुका, परन्तु और कुछ न कहूँगा: हाँ दो बार भी मैं कह चुका, परन्तु अब कुछ और आगे न बढ़ूँगा।''

आयतें 3, 4. अय्यूब का उत्तर नियन्त्रित और विनम्र था। उसे यह समझ में आ गया था कि परमेश्वर की विशाल सृष्टि की बड़ी योजना में वह **तुच्छ** था। अय्यूब परमेश्वर को उत्तर नहीं दे पाया और उसमें **अपनी अंगुली दांत तले** दबा ली (21:5 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 5. ''एक बार तो मैं कह चुका, परन्तु और कुछ न कहूँगा: हाँ दो बार भी मैं कह चुका, परन्तु अब कुछ और आगे न बढ़ूँगा।'' इब्रानी भाषा में यह, कहने का एक तरीका था ''मैं पहले ही बहुत अधिक बार बोल चुका हूं।''[4] अय्यूब बुझा बुझा सा था पर वह सच्चा पश्चात्ताप नहीं दिखा पाया था। इसलिए यहोवा ने उसके सामने प्रश्नों की दूसरी शृंखला रख दी।

परमेश्वर के दूसरे संदेश का आरम्भ (40:6-24)

''क्या तू मेरा न्याय व्यर्थ ठहराएगा?'' (40:6-9)

[6]तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यह उत्तर दिया, [7]''पुरुष के समान अपनी कमर बाँध ले, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे बता। [8]क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा? [9]क्या तेरा बाहुबल परमेश्वर के तुल्य है? क्या तू उसकी-सी बोली से गरज सकता है?''

आयतें 6, 7. यहोवा के दूसरे संदेश का आरम्भ पहले वाले संदेश के फार्मूले के साथ ही हुआ (38:1, 3 पर टिप्पणियां देखें)। **आंधी** शब्द उसी इब्रानी शब्द से लिया गया है जिसका अनुवाद 38:1 में ''बवंडर'' (NASB - अनुवादक) हुआ है।

आयत 8. ''क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा?'' अय्यूब से पूछे गए यह चुभने वाले प्रश्न हमें पुस्तक की समस्या के केन्द्र में ले आते हैं। अय्यूब और परमेश्वर के बीच झगड़ा न्याय के प्रश्न के आस पास केन्द्रित था। अपनी खराई को बरकरार रखते हुए अय्यूब ने परमेश्वर की खराई या न्याय पर संदेह किया था। सेमुएल बैकटेरियन ने टिप्पणी की है,

> सदाचार की मूर्त और नैतिकता के नमूने, अय्यूब ने परमेश्वर से अपना हक्क पाने की उम्मीद की थी। हत्ताश और अपने साथियों तथा अपनी नज़र में हर प्रकार से दोषी ठहराए जाने पर उसके लिए या तो यह मान लेने का विकल्प था कि उसका परमेश्वर की उदारता पर दावा करने का कोई हक्क नहीं था या अपने स्वयं की स्व-धार्मिकता को बरकरार रखने के लिए परमेश्वर को गलत घोषित कर दे। इस प्रकार से कवि बार बार बहुत अर्थपूर्ण ढंग से अय्यूब के पाप को सामने लाता है - मनुष्यों के विरुद्ध किए गए नैतिक अपराधों से हौरिजोंटल टाइप का पाप नहीं बल्कि वर्टिकल टाइप का पाप जिससे कोई प्राणी परमेश्वर का न्याय करने का साहस करके अपने सृजनहार पर दोष लगाता है।[5]

यह ईश्वरीय न्याय की बात थी जिसका अय्यूब ने कहा कि उसे पता नहीं था। यहोवा के दूसरे

संदेश में इस तथ्य के खुलासे से अय्यूब ने मन फिराया।

आयत 9. संसार के नियम को अपने हाथ में लेने के योग्य होने के लिए अय्यूब का **बाहुबल परमेश्वर के तुल्य** होना आवश्यक था। पवित्र शास्त्र में मनुष्य हो या ईश्वर, सामर्थ को दर्शाने के लिए ''भुजा'' और ''बांह'' ''बाहुबल'' ''भुजबल'' का इस्तेमाल आम तौर पर हुआ है। परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने की बात उसकी सृष्टि तथा प्रबन्ध से पता चलती है। उसकी **बोली** से हर सृजी गई वस्तु अस्तित्व में आई। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है, ''विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो'' (इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर के सामने मनुष्य निर्बल और शक्तिहीन है, इस कारण अय्यूब को परमेश्वर के न्यायी को चुनौती देने का कोई अधिकार नहीं था (देखें 33:12; 36:22, 23)।

अय्यूब को न्यायी की भूमिका लेने की चुनौती दी गई (40:10-14)

10''अब अपने को महिमा और प्रताप से सँवार और ऐश्वर्य और तेज के वस्त्र पहिन
ले। 11अपने अति क्रोध की बाढ़ को बहा दे, और एक एक घमण्डी को देखते ही उसे नीचा
कर। 12हर एक घमण्डी को देखकर झुका दे, और दुष्ट लोगों को जहाँ खड़े हों वहाँ से गिरा
दे। 13उनको एक संग मिट्टी में मिला, और उस गुप्त स्थान दे। 14तब मैं भी तेरे विषय में मान
लूँगा, कि तेरा ही दाहिना हाथ तेरा उद्धार कर सकता है।''

आयतें 10-13. इन आयतों में यहोवा ने दस आज्ञाओं के साथ अय्यूब से न्याय करने की भूमिका निभाने को कहा। **''अब अपने को महिमा और प्रताप से सँवार और ऐश्वर्य और तेज के वस्त्र पहिन ले''** (40:10)। समाज में यह शक्ति और श्रेष्ठ पद का प्रतीक है। इन शब्दों का इस्तेमाल आम तौर पर परमेश्वर के संदर्भ में होता है (भजन संहिता 21:5; 45:3, 4; 96:6; 104:1; 111:3)। यदि अय्यूब को न्यायी की गद्दी पर बैठना था तो उसे इस प्रकार से पेश आना और काम करना आवश्यक था जो ऐसे उच्च पद के योग्य हो।

''अपने अति क्रोध की बाढ़ को बहा दे, और एक एक घमण्डी को। ... और दुष्ट लोगों को जहाँ खड़े हों वहाँ से गिरा दे'' (40:11, 12)। पहले कही गई अय्यूब की बात का संकेत था कि परमेश्वर न्याय करने में असफल रहा था (देखें 40:8)। परमेश्वर इस गलतफहमी को चुनौती दे रहा था। एक अर्थ में वह यह कह रहा था, ''हे अय्यूब, यदि तुझे लगता है कि तू मुझ से बेहतर कर सकता है तो फिर तू मेरी जगह क्यों नहीं ले लेता? परन्तु प्रभावशाली ढंग से न्याय करने के लिए समझ और सामर्थ केवल परमेश्वर के पास है।''

''उनको एक संग मिट्टी में मिला दे, और उस गुप्त स्थान में उनके मुँह बाँध दे'' (40:13)। यह दुष्टों के दिए जाने वाले मृत्यु दण्ड की बात हो सकती है। NIV में कहा गया है, ''कि उन सब को मिट्टी में दफन करके; उनके चेहरों को कब्र में ढांप दे।''

आयत 14. ''तब मैं भी तेरे विषय में मान लूँगा, कि तेरा ही दाहिना हाथ तेरा उद्धार कर सकता है।'' मेरविन एच. पोप ने बताया है, ''यदि अय्यूब वह कर सकता जिसे नज़रअंदाज करने का उसने परमेश्वर पर करने का आरोप लगाया तो वह अपने आपको बचा सकता था।''[6]

परन्तु यदि अय्यूब ने यह मान लिया कि ऐसी बातों को परमेश्वर के हाथों में ही रहने दिया जाए, तो हम भी मान लें कि वह ''सर्वशक्तिमान शासन न्यायी और हर मामले का निपटाने वाला है।''[7]

जलगज (दरियाई घोड़े) पर विचार (40:15-24)

[15]''उस जलगज को देख, जिसको मैं ने तेरे साथ बनाया है, वह बैल के समान घास खाता है। [16]देख उसकी कटि में बल है, और उसके पेट के पट्ठों में उसकी सामर्थ्य रहती है। [17]वह अपनी पूँछ को देवदार के समान हिलाता है; उसकी जाँघों की नसें एक दूसरे से मिली हुई हैं। [18]उसकी हड्डियाँ मानो पीतल की नलियाँ हैं, उसकी पसलियाँ मानो लोहे के बेंड़े हैं। [19]वह परमेश्वर का मुख्य कार्य है; जो उसका सिरजनहार हो उसके निकट तलवार लेकर आए! [20]निश्चय पहाड़ों पर उसका चारा मिलता है, जहाँ और सब वनपशु कलोल करते हैं। [21]वह कमल के पौधों के नीचे रहता, और नरकटों की आड़ में और कीच पर लेटा करता है। [22]कमल के पौधे उस पर छाया करते हैं, वह नाले के बेंत के वृक्षों से घिरा रहता है। [23]चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह न घबराएगा, चाहे यरदन भी बढ़कर उसके मुँह तक आए परन्तु वह निर्भय रहेगा। [24]जब वह चौकस हो तब क्या कोई उसको पकड़ सकेगा, या फन्दे लगाकर उसको नाथ सकेगा?''

इस पद्य से आरम्भ करके अध्याय 41 के अंत तक यहोवा ने दो विशालकाय जंतुओं का वर्णन किया जो स्पष्टतया मनुष्य के नियन्त्रण से बाहर हैं। उन्हें बहमोथ और लिव्यातान कहा गया है। (अधिक जानकारी के लिए, देखें *परिशिष्ट: बहमोथ और लिव्यातान,* पृष्ठ 198-99.) जॉन ई. हार्टले ने लिखा है, ''पशुओं के इस लम्बे चित्रण में याहवेह का उद्देश्य ... अय्यूब को उसके प्रभुत्व को मनवाना है। इन दो चित्रणों में अय्यूब को अपने रवैये से खतरनाक अर्थों से जागृत करने के इरादे से वह ताने तथा उट-पटांग तर्कों का इस्तेमाल करता है।''[8]

आयत 15. ''उस जलगज को देख, जिसको मैं ने तेरे साथ बनाया है।'' ''जलगज'' ''जंतु'' के लिए इब्रानी शब्द के सामान्य बहुवचन रूप בְּהֵמוֹת, (*बेहमाह*) का अनुवाद है।[9] पुराने नियम में यह बहुवचन रूप नौ बार मिलता है। और (इसका लिपयंत्रण टिप्पणी में नीचे दिया गया है - अनुवादक) इस लिपयंत्रण का कारण सही सही पहचान पाने में कठिनाई का कारण है कि किस ''जंतु'' का वर्णन किया जा रहा है। कुछ विद्वानों का दावा है कि यह काल्पनिक पशु की बात है। फिर भी हेली बिल्कुल सही था जब उसने लिखा, ''काल्पनिक विचार की चर्चा किए बिना यह बात, 'जिसको मैंने तेरे साथ बनाया है' और आयत 19 में कही गई बात से सवाल सुलझ जाना चाहिए कि परमेश्वर वास्तविक जीव की बात कर रहा था।''[10]

''वह बैल के समान घास खाता है।'' यहां पर उसकी आदतों और निवास के साथ साथ बेहेमोथ या जलगज का विस्तृत विवरण आरम्भ होता है। ''बैल'' की तरह वह शाकाहारी है। ''घास'' (*chatsir, चेटिसर*) काटे जाने से पहले ''हरी घास'' को कहा गया है (देखें 8:12)।

आयत 16. एक जानवर का विवरण जिसके मध्यभाग जिसके **उसकी कटी** और **उसके पेट** में बड़ी **सामर्थ** है। पुराने नियम में ''कमर'' उस शक्ति का स्थान कहा गया है (व्यवस्थाविवरण 33:11; भजन संहिता 69:23; नहूम 2:1)।

आयत 17. जलगज (या बेहेमोथ) की **पूंछ** को काव्य शैली में **देवदार** वृक्ष के साथ मिलाया गया है। लबनोन के देवदार प्रसिद्ध थे जिनका वर्णन पुराने नियम में जगह जगह किया गया है। इसकी तुलना आवश्यक नहीं कि इसके आकार से हो बल्कि उसकी पूंछ के कड़ेपन (NJB; NRSV) या सीधेपन (NLT) से की गई है। NIV में कहा गया है कि ''उसकी पूंछ में देवदार सी लचक है।''

आयत 18. जलगज के कंकाल के ढांचे की सामर्थ भी प्रभावशाली है, जिसकी तुलना **पीतल** और **लोहे** से की गई है। पूरे पुराने नियम में इन धातुओं का इस्तेमाल दृढ़ता, टिकाऊपन तथा शक्ति के प्रतीक के रूप में किया गया है (व्यवस्थाविवरण 28:23; 2 शमूएल 22:35; अय्यूब 6:12; 20:24; 41:27; भजन संहिता 107:16; यशायाह 45:2; 48:4; यिर्मयाह 1:18; मीका 4:13)। जंतु के विवरण में एक ऐसा शक्तिशाली जीव दिखाया गया है जो अपने सामने आने वाले किसी भी व्यक्ति को भयभीत कर दे।

आयत 19. ''वह परमेश्वर का मुख्य कार्य है।'' ''मुख्य'' (*re'shith, अरिशत*) समय या पद दोनों में से किसी का प्रतीक हो सकता है। विलियम डी. रेबर्न ने बताया, ''उत्पत्ति 1:24 में इब्रानी शब्द *बेहमाह,* जो *बेहेमोथ* का एकवचन है, परमेश्वर द्वारा मानवीय जीवों से थोड़ा पहले बनाए गए जंतुओं की सूची में सबसे पहले आता है।''[11] परन्तु यहां पर ''मुख्य'' का अर्थ यह है कि जलगज परमेश्वर के बनाए जीवों में ''सबसे शानदार'' है। NEB में कहा गया है कि वह ''परमेश्वर के कामों में सर्वोच्च है।''

''जो उसका सिरजनहार हो उसके निकट तलवार लेकर आए!'' यह बात हैरान करने वाली है। ''[उसका] तलवार'' जलगज की है या परमेश्वर की? NASB में स्पष्टतया जलगज का पक्ष लिया गया है क्योंकि यह दर्शाने के लिए कि यह परमेश्वर के लिए नहीं है, उसमें ''उसका'' लिखकर उसे बड़े अक्षरों में नहीं दिया गया। यदि ऐसा होता तो शायद तलवार उस जानवर के दांतों को कहा गया होता। परन्तु अधिकतर संस्करणों में ''तलवार'' परमेश्वर की माना गया है (NIV; NKJV; NRSV; NJPSV)। इस कथन का अर्थ सम्भवतया यह है कि जलगज का बनाने वाला उसे अपने वश में कर सकता था (TEV; NCV; CEV; NLT)।

आयत 20. यह तथ्य कि **पहाड़ों** या ''पहाड़ियों'' (TEV; NIV; NCV) से जलगज को **चारा** मिलता है। इस जानवर के बड़े पेट पर ज़ोर देता हे। **सब वन पशु** उसके साथ सुलह से रहते हैं, क्योंकि वह शाकाहारी है।

आयतें 21, 22. इन आयतों में जलगज का निवास किया गया है। रेबर्न ने लिखा है कि ''जिस शब्द का अनुवाद *कमल के पौधों* से हुआ है ... वह मिस्र की जलकुमुदनी नहीं बल्कि पूर्वी भूमध्य सागर के पास तथा उत्तरी अफ्रीका में पाया जाने वाला कंटीला वृक्ष है। यह गलील की झील के आस पास नमी वाले इलाकों में फलता और गलील की झील के आस पास बहुतायत में पाया हाता है।''[12] उसने आयत 21 का यह अनवाद सुझाया: ''वह कंटीली झाड़ी के नीचे लेटने के लिए जाता या अपने आपको दलदल के पानी में लम्बी घास में छुपा लेता है।''[13] इन आयतों के विवरण से बहुत से लोगों ने उसे दरियायी घोड़ा मान लिया है (देखें *परिशिष्ठ: बेहेमोथ और लिव्यतान,* पृष्ठ 198-99)।

आयत 23. ''चाहे नदी की बाढ़ भी हो तो भी वह न घबराएगा।'' ''यह नदी के किनारे सोया हुआ हो सकता है, या नदी के अंदर भी हो सकता है, उसकी आंखें, कान, और नसें भी पानी के बाहर हो सकती हैं; पर यह गोता लगाकर तैर सकता है। चाहे अचानक से पानी का

प्रवाह बढ़ भी जाए तो भी यह परेशान नहीं होता।''[14] हमारे पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि **यरदन** नदी में कभी दरियायी घोड़े होते थे। परन्तु हार्ट ने सुझाव दिया है कि ''तेज प्रवाह वाली किसी भी नदी के सांकेतिक रूप में *यरदन* का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिए यहां पर यह बाढ़ की स्थिति वाली नील नदी को दर्शाता है।''[15]

आयत 24. ''जब वह चौकस हो तब क्या कोई उसको पकड़ सकेगा, या फन्दे लगाकर उसको नाथ सकेगा?'' ''दरियाई घोड़े को पकड़ने का एक पसंदीदा तरीका *उसको नाथना* था ताकि वह अपने मुंह से सांस ले सके; फिर उसके खुले मुंह में से एक ज़ोरदार प्रहार किया जाता।''[16] विवरण की मुख्य बात इस आयत में मिलती है कि ऐसे ताकतवर जानवर को बिना बड़ी कठिनाई से मनुष्य पकड़ नहीं सकता। वह खतरनाक है और भयभीत करने वाला फिर भी परमेश्वर ने उसे वैसे ही सृजा जैसे परमेश्वर ने मनुष्य को।

प्रासंगिकता

परमेश्वर के साथ झगड़ना (40:1-5)

यहोवा ने अपने पहले संदेश के आरम्भ में अय्यूब को जवाब देने का मौका दिया। उसने कहा, ''क्या जो बकवास करता है वह सर्वशक्तिमान से झगड़ा करे? जो परमेश्वर से विवाद करता है वह इसका उत्तर दे'' (40:2)। परमेश्वर के सामने अय्यूब का उत्तर विनम्रता से भरा हुआ था। चाहे वह ''पूर्वी देशों के लोगों में सबसे बड़ा'' होता था (1:3), परन्तु अय्यूब ने माना कि वह परमेश्वर के सामने ''तुच्छ'' था। वह केवल इतना कर सकता था कि वह अपने सृजनहार के सामने खामोश रहे (40:4, 5)।

आज परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में अय्यूब के अनुभव से हमें क्या शिक्षा मिलती है? (1) हम इस संसार की तथा अपने जीवनों की बहुत सी बातों को समझ नहीं सकते, परन्तु परमेश्वर सब कुछ समझता है। (2) हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और यह जान लेना चाहिए कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो वह हमारी सुनता है। (3) परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर अपने ढंग से और अपने समय पर देता है। परमेश्वर के साथ अधीर होने से हमें कुछ नहीं मिलेगा। (4) हमें देख के बीच में भी परमेश्वर के सामने आदरपूर्वक पेश आना चाहिए। अय्यूब ने अपने आरोपों में परमेश्वर के सामने विनम्रता की हद पार कर दी; परमेश्वर ने उसे ''दोष ढूंढ़ने वाला'' कहा। ''क्यों'' का सवाल करने में कोई बुराई नहीं है पर परमेश्वर पर दोष लगाना अपमान के दायरे को लांग जाना है। परमेश्वर तक पहुंचा जा सकता है पर इसके बावजूद वह महान और पवित्र है और हमें चाहिए कि उसका आदर उसी के अनुसार करें।

न्याय करने वाले की गद्दी पर बैठना (40:6-14)

कितनी बार हम दूसरों पर दोष लगा देते हैं, जबकि बाद में पता चलता है कि हम गलत थे! हमें कोई गलतफहमी हुई होती है या हमारे पास कोई पूरे तथ्य नहीं होते। मनुष्य होने के नाते हमारे लिए गलत निर्णय देना आसान है। उदाहरण के लिए बास्केटबाल का मैच देखते हुए, फैन आम तौर पर रैफरी के सीटी बजाने पर परेशान हो उठते हैं। कई बार प्रशंसकों की शिकायतें सही हो सकती हैं, पर ग्राउंड से बाहर या घर में बैठकर यह सोच लेना कि उसकी बात रैफरी से जो

पांच फुट की दूरी पर है सही है, ढीठपन है। परन्तु यह भी सच है कि रैफरी भी इनसान होते हैं और उन से भी गलतियां हो जाती हैं।

परमेश्वर ने जो कभी गलती नहीं करता, अय्यूब को इसलिए डांटा क्योंकि उसने उस पर अन्यायी होने का आरोप लगाया था। अपना दृष्टिकोण और ज्ञान सीमित होने के बावजूद अय्यूब ने परमेश्वर के ऊपर अन्यायी होने का आरोप लगाया। जवाब में परमेश्वर ने न्याय करने की अपनी शक्ति का इस्तेमाल करते हुए अय्यूब को वर्दी पहनकर न्यायी की भूमिका अदा करने की चुनौती दी। बेशक अय्यूब ऐसा नहीं कर सकता था। क्योंकि उसका ''बाहुबल परमेश्वर के तुल्य'' न था और न ही वह ''उसकी सी बोली से गरज सकता'' था (40:9)। अय्यूब न्यायी की गद्दी पर नहीं बैठ सकता था।

मसीही लोग इस बात से चौकस रहें कि परमेश्वर की जगह पर बैठने की न सोचे। एक ओर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम कभी पाप पर दोष न लगाएं। आज बाइबल के जिस वचन का बार बार दुरुपयोग होता है उसमें मत्ती 7:1 है: ''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।'' यीशु लोगों को अपने पाप पर काबू पाने में सहायता से पहले अपनी जांच करने की आवश्यकता पर चेतावनी दे रहा था। उसने कहा कि जब हमें साफ-साफ नजर आ सकता हो तभी हम अपनी भाई की आंख में से लट्ठा निकाल सकते हैं (मत्ती 7:5)। फिर उसने ''कुत्तों'' और ''झूठे'' भविष्यवक्ताओं के बारे में चिताया। ये दो नाम स्पष्टतया हमें दोष लगाने को कहते हैं (मत्ती 7:6, 15)।

दूसरी ओर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अंतिम न्यायी है। अपने वैरियों से भी हिसाब बराबर करना हमारा काम नहीं है। पौलुस न लिखा, ''हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, 'बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा''' (रोमियों 12:19)। हम चाहे वचन के मानक के आधार पर लोगों को समझाने की कोशिश करते हैं (यूहन्ना 12:48), परन्तु अंत में न्याय करने वाला मसीह ही होगा जो बताएगा कि कौन खोया हुआ है और किसका उद्धार हुआ है (मत्ती 25:31-46; 2 कुरिन्थियों 5:10)। उसकी जगह बैठना हमारा काम नहीं है। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]होमेर हेली, *ए कॉमेंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 349. [2]लुडविग कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:417-18. [3]वहीं, 2.1225-26. [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमेंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 392. [5]*द इंटरप्रेटर'स बाइबल,* सम्पा. जॉर्ज आर्थर बट्रिक (नैशविल: एबिंगडन प्रैस, 1954), 3:1185 में सेमुएल टेरियन, ''द बुक ऑफ़ अय्यूब: इंट्रोडक्शन ऐंड एक्सेजेसिस।'' [6]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यूॅ यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 268. [7]हेली, 351. [8]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 521. [9]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:111-12. [10]हेली, 352.

[11]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 747. [12]वहीं, 748. [13]वहीं। [14]सेमुएल रोअले ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सेजेटिकल कॉमेंट्री ऑन द बुक्स ऑफ़ अय्यूब,* द इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमेंट्री (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 357. [15]हार्टले, 526. [16]वहीं।